हिंदी अनुसंधान की दशा एवं दिशा

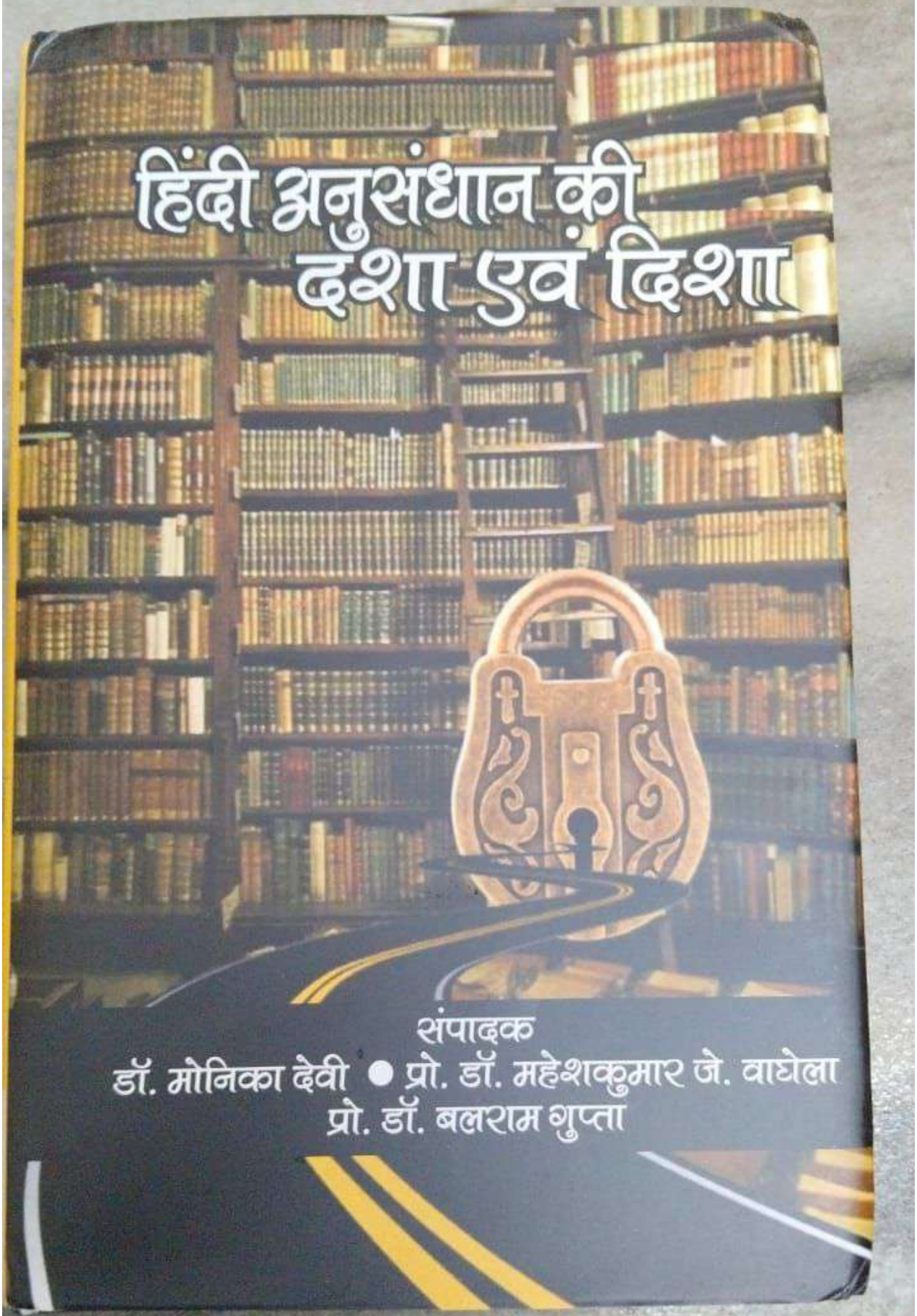

संपादक
डॉ. मोनिका देवी • प्रो. डॉ. महेशकुमार जे. वाघेला
प्रो. डॉ. बलराम गुप्ता

प्रकाशक

हंस प्रकाशन
(पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स)
बी-336/1, गली नं. 3, दूसरा पुस्ता
सोनिया विहार, नई दिल्ली, 110094
दूरभाष : 9868561340, 7217610640
email : hansprakashan56@gmail.com
website : www.hansprakashan.com

विक्रय कार्यालय
4637/20, हरि सदनए 217, द्वितीय तल
अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली, 110002
दूरभाष : 011-45647564, 7217610640

आवरण पृष्ठ : दीनानाथ पाटिल

प्रथम संस्करण : 2023
ISBN : 978-81-965778-0-3
© : **डॉ. मोनिका देवी**
मूल्य : 495/-

मुद्रक : एस. के. ऑफसेट, दिल्ली

Hindi Anusandhan ki dashaAvam Disha : Editor

डॉ. मोनिका देवी

जन्म : कादरगढ़, जिला शामली (उत्तर प्रदेश)

शिक्षाः प्रारंभिक शिक्षा ग्रामीण विद्यालय में, स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षा मेरठ के चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय से, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा मद्रास से एम.फिल्. और उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद से हिंदी साहित्य में पी-एच.डी.। हैदराबाद के ही प्रख्यात स्वयत्त निजाम कॉलेज से अनुवाद अध्ययन में डिप्लोमा।

प्रकाशित पुस्तकें : 15 पुस्तकें, विदेश में राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन 20, 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' किन्नर जीवनीपरक उपन्यास है जिस पर पी-एच.डी. और एक एम. फिल्. शोध कार्य हो चुका है, देश विदेश से प्राप्त सम्मान 90 (संपादित पुस्तक)।

हंस प्रकाशन

Email : hansprakashan56@gmail.com
Website : www.hansprakashan.com
Phone : 011-45647564, 7217610640

मूल्य : 495/-

ISBN : 978-81-965778-0-3

आवरण पृष्ठ : बीजनाथ पाटिल

का प्रयास करें। यह किताब हिन्दी भाषा के साथ हमारे संबंध को गहराई से समझने और बढ़ावा देने का एक माध्यम होना चाहिए।

हिन्दी भाषा भारतीय सबके लिए एक साजीव सांस्कृतिक धरोहर है। यह न केवल भाषा है, बल्कि भाषा की अद्वितीयता और साहित्यिक धरोहर भी है। हिन्दी का अध्ययन हमारे सांस्कृतिक और भाषा संबंधों को मजबूत करता है और भाषा के रूप, स्वरूप, और विकास के पीछे के कारणों को समझने में मदद करता है। इस किताब का प्रमुख उद्देश्य है हिन्दी भाषा के अद्वितीय और विविध पहलुओं को शोधने, अध्ययन करने, और समझने का माध्यम प्रदान करना है। इसमें हिन्दी के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया गया है, जैसे कि भाषा का इतिहास, विज्ञान, साहित्यिक उपयोग, और सामाजिक पहलु। यह किताब हिन्दी भाषा के अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों, शिक्षकों, और भाषा अनुसंध ानकर्ताओं के लिए उपयोगी है। इसमें सरल और अधिग्रहणीय भाषा में जानकारी प्रस्तुत की गई है, जिससे पाठक आसानी से हिन्दी भाषा के विभिन्न पहलुओं को समझ सकते हैं। इस किताब के माध्यम से हिन्दी भाषा के अनुसंधान क्षेत्र में नई सोच और अनुसंधान की दिशाओं का विकास किया जा सकता है। यह अनुसंधानकर्ताओं को नए प्रयासों की ओर प्रोत्साहित करने में मदद करेगा और हिन्दी भाषा के साथ गहरी समर्पण को बढ़ावा देगा।

संक्षेप में, हिन्दी अनुसंधान किताब भाषा के अद्वितीय और विशेषता को महत्वपूर्ण रूप से प्रमोट करती है, और इसके प्रेमियों को हिन्दी भाषा के साथ अपने संबंध को मजबूती से बनाने के उपाय प्रदान करती है। यह किताब हिन्दी भाषा के महत्व को प्रमोट करने में मदद करेगी और हमारे सांस्कृतिक धरोहर को बचाने में सहायक होगी।

डॉ. मोनिका देवी
प्रो., डॉ. महेशकुमार जे. वाघेला
प्रो., डॉ. बलराम गुप्ता

अनुक्रम

	भूमिका	5
1.	हिन्दी अनुसंधान कार्य दशा व दिशा *डॉ. बलराम गुप्ता*	9
2.	सामाजिक अनुसंधान की तुलनात्मक पद्धति *शेख अफरोज*	14
3.	कविता में शोध के विविध आयाम *कुलदीप शर्मा*	20
4.	हिन्दी अनुसन्धान की दशा व दिशा *चंद्रप्रभा*	28
5.	सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रयोजनमूलक हिंदी के संदर्भ में हिंदी शोध की दिशा एवं दशा *डॉ. रंजीत कुमार*	35
6.	आधुनिक हिंदी शोध एवं अनुसंधान के विकास *डॉ. सुनीता साह*	48
7.	हिन्दी साहित्यिक अनुसंधान : स्वरूप और प्रविधि *प्रो., डॉ. महेशकुमार जे. वाघेला*	59
8.	तुलनात्मक साहित्यिक अनुसंधान : स्वरूप और प्रविधि *प्रो. डॉ. नीलम ए. सेन*	71
9.	मलयालम भाषियों का हिंदी अनुसंधान एक विहंगम अवलोकन *डॉ. रंजित.एम्*	78
10.	अनुसंधान की परिभाषा एवं स्वरूप *डॉ. एस. बी. पाटिल*	84
11.	शोध में विषय प्रवेश की भूमिका *डॉ. मोनिका देवी*	87
12.	शोध और आलोचना *नमित कुमार शर्मा*	90

13. हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श की दशा व दिशा 94
तेज प्रकाश जोशी
14. आधे-अधूरे नाटक में संवेदना और शिल्प 98
डॉ. मुनेश कुमार पाठक
15. कानून के क्षेत्र में शोध का महत्व 100
नारायण मोबरसा नारलाई
16. हिंदी शोध : दशा एवं दिशा 103
डॉ. ऐश्वर्या झा
17. साहित्यिक अनुसंधान 107
डॉ. अलका यादव
18. हिन्दी और मलयालम कहानियो में यर्थाथवाद 109
प्रो. मनु
19. हिंदी शोध में इंटरनेट की उपयोगिता एवं महत्व 114
डॉ. सरिता शुक्ला
20. साहित्य, समाज और उच्चशिक्षा 117
प्रो. डॉ. अनीता रानी कन्नौजिया
21 लोक साहित्य में शोध की दशा व दिशा 122
डॉ. नरेश कूमार सिहाग

भूमिका

हिन्दी अनुसंधान किताबः हिन्दी भाषा की गहराई में खोज का सफर। हिन्दी भाषा हमारे साहित्य, संस्कृति, और भारतीय जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका अनुसंधान किताबों के माध्यम से हमारे भाषा के विकास और समृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हिन्दी अनुसंधान किताब एक ऐसा माध्यम है जो हमें हिन्दी भाषा की गहराई में जानने का अवसर प्रदान करता है, और हमारे भाषा के साथ हमारी जड़ें मजबूत करता है।

हिन्दी अनुसंधान किताब एक मूल्यवान संसाधन है जो हिन्दी भाषा के विभिन्न पहलुओं को शोध ने और समझने का अवसर प्रदान करता है। इसके माध्यम से हम भाषा के इतिहास, विकास, और विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग किए जाने वाले व्यक्तियों के अद्वितीय काम का पता लगा सकते हैं। हिन्दी अनुसंधान किताब के माध्यम से हम भाषा के विभिन्न रूपों, उपयोगों, और भाषा विज्ञान के पहलुओं को भी अध्ययन कर सकते हैं। हिन्दी भाषा का इतिहास और उसके विकास के प्रमुख पहलुओं पर विचार करें। यह श्रेणी भाषा के विभिन्न ध्वनि, लिपि, और भाषा परिवर्तनों को शामिल कर सकती है। भाषा विज्ञान के सिद्धांतों और विधियों के बारे में चर्चा करें, और उनका हिन्दी भाषा पर प्रभाव कैसे पड़ता है। हिन्दी साहित्य में भाषा का उपयोग कैसे होता है, इस पर विचार करें। यह श्रेणी भाषा के साहित्यिक आदर्शों को शामिल कर सकती है, जैसे कि कविता, कहानी, नाटक, और उपन्यास। हिन्दी भाषा का सामाजिक और सांस्कृतिक पहलु कैसे प्रभावित करता है, इस पर विचार करें। यह श्रेणी भाषा के विभिन्न समुदायों, जातियों, और क्षेत्रें में उपयोग किए जाने वाले अभिवादनों, शब्दावलियों, और उदाहरणों को शामिल कर सकती है।

हिन्दी अनुसंधान किताब के का मुख्य उद्देश्य यह है कि यह किताब हिन्दी भाषा के प्रेमियों, शिक्षाकर्मियों, और अनुसंधानकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन हो। इसमें विशेष रूप से हिन्दी भाषा के अद्वितीय पहलुओं, उपयोगों, और साहित्यिक आदर्शों को समझने और विश्लेषण करने के उपाय प्रस्तुत करने

काव्य में नियतीय पात्रों की सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन", लक्ष्मीदासन जी के "विश्व के रामायण महाकाव्य में वैश्विक जीवन मूल्य"-, शीबा सी.पी. जी की "हिंदी उपन्यासों में पत्रकारिता की दुनिया", सूर्यघोस जी की "हिंदी कहानियों में बालपात्र एक अध्ययन, लजीता के की" मृदुला गर्ग की कहानियों में उत्तराधुनिक परिदृश्य, सत्यनाथन जी के "राजभाषा के रूप में हिंदी का विकास-एक अध्ययन", चन्द्रिका टी जी की "हिंदी और मलयालम व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन", वी.जी गोपालकृष्णन जी के "समांतर हिंदी कहानियों में सामाजिक चेतना", "एक आलोचनात्मक अध्ययन",रजित एम् के "हिंदी सूफी काव्यों में समाजदर्शन", शिबी सी के "हिंदी के नुक्कड़ नाटक परम्परा एवं प्रयोग एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" प्रिया जी की "आधुनिक हिंदी कविता की लोकचेतना का विश्लेषणात्मक अध्ययन" आदि उल्लेखनीय है।

"सांस्कृतिक परिवर्तन में स्त्री" अस्योत्तर हिंदी उपन्यासों के विशेष सन्दर्भ में, "आत्मकथाओं के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा और कार्यस्थल में दलित जीवन", "हिंदी और मलयालम नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन" (1990 से 2010 तक प्रकाशित हिंदी तथा मलयालम नाटकों के विशेष सन्दर्भ में), "संजीव की कहानियों में पारिस्थितिक विमर्श", "उच्च शिक्षा जगत की समस्याएँ अस्योत्तर हिन्दी उपन्यास में", "आदिवासी जीवन एवं संस्कृति समकालीन हिन्दी कहानी में (सन 1990 के बाद के विशेष संदर्भ में)" जैसे बिल्कुल नये विषयों में हिंदी विभाग के शोधार्थी अब शोध कर रहे है।

भाषाविज्ञान, अनुवाद, तुलनात्मक अध्ययन, पारिस्थितिक विमर्श, बाल विमर्श, नारी विमर्श, वृद्ध विमर्श जैसे सभी विषयों के बारे में निष्ठा, लग्न, समर्पण एवं ईमानदारी से शोध अब भी जारी है। हिंदी साहित्य के लगभग सभी साहित्यकार अपने रचनाओं के बारे में केरल के किसी भी विश्वविद्यालय में शोध करने की खबर पुरस्कार मिलने के समान ही मान रहे है। यह शोध निदेशक और शोधार्थियों के लिए गर्व की बात है। पहले शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति था, लेकिन आज शिक्षा का मतलब रोजगार से है। यह बदलाव आने पर भी हम गर्व के साथ कह सकते है कि साहित्य और समाज को दिशा निर्देश देने और राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया में सहभागिता देने युक्त शोध अहिन्दी प्रांत केरल के विश्वविद्यालय में हो रहे है।

संदर्भ सूची

1. शोध निदेशालय, कालीकट विश्वविद्यालय
2. शोध निदेशालय, कोच्चिन विश्वविद्यालय
3. शोध निदेशालय, केरल विश्वविद्यालय
4. शोध निदेशालय, कन्नूर विश्वविद्यालय
5. शोध निदेशालय, श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय

ने शोध किये पी.जी विजयन जी, "आधुनिक हिंदी और मलयालम कविताओं की प्रतीकात्मक प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध किये पी.के विलासिनी जी आदि के नाम भी यहाँ स्मरणीय है।

केरल के विश्वविद्यालयों की बात करें तो, जी गोपीनाथन जी के "हिंदीतर भाषियों विशेषतः केरलियों का हिंदी को योगदान", के डॉ.ए रामचन्द्र देव के निदेशन में इंदिरा जी की "हिंदी और मलयालम के शब्दों का तुलनात्मक अध्ययन", पी.आर रामन नम्पूतिरी जी का "रीतिकालीन हिंदी काव्य और उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि", टी.के सरलादेवी जी की "मैथिलीशरण गुप्त और जयशंकर प्रसाद के काव्यों में नारीत्व का चित्रण", सुधीरकुमार चौहान के "हजारीप्रसाद द्विवेदी के सर्जनात्मक साहित्य का आलोचनात्मक मूल्यांकन", सुनीताबाई जी की "मैथिलीशरण गुप्त के काव्यों का अध्ययन सांस्कृतिक स्रोत के सन्दर्भ में", के.करुणाकरन जी के शोध प्रबंध "हिंदी और मलयालम के लो काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन", आर.चन्द्रिका जी की शोध प्रबंध "आधुनिक हिंदी कविता पर गांधीजी और उनकी शिक्षाओं का प्रभाव एक आलोचनात्मक अध्ययन", एस तंकमणी अम्मा जी की "आधुनिक हिंदी खंडकाव्य एक आलोचनात्मक अध्ययन", उषा जी की "आधुनिक हिंदी साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन", संगीता नायर की "आधुनिक हिंदी कवयित्रियों की कविताओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन", सबीना जी की "अनामिका, अलका सरोजी, और महुआ का कथा साहित्य एक विश्लेषणात्मक अध्ययन", जैसे अध्ययन यह साबित कर रहा है कि हिंदी साहित्य के प्रत्येक शाखा पर मलयालम भाषी शोधार्थियों की नजर पड़ी है।

इसके साथ के.के वेलायुधन जी के "आधुनिक हिंदी काव्यालोचना के विकास में कवियों का योगदान", अब्दुल जलील के.वी के "हिंदी और मलयालम उपन्यास साहित्य पर मार्क्सवाद का प्रभाव", जे.रामचन्द्रन नायर जी के "आधुनिक हिंदी काव्य में व्यंग्य", वी रामलिंगम जी के "हिंदी और मलयालम कविताओं में व्यंग्य तुलनात्मक अध्ययन", टी.एन विश्वम्भरन जी के 'हिंदी नाटक की तकनीकी का विकास प्रसाद के बाद", मुहम्मदकुंज मेत्तर जी के "दखीनी हिंदी के सूफी साहित्य एक अध्ययन", पी.के राधामनी जी की "भक्ती आन्दोलन का सामाजिक प्रभाव", एम्.एस विश्वभरन जी के "हिंदी के नये नाट्यरूप प्रयोग-ऐतिहासिक परिवृत्त", पी.के वेणू जी के "हिंदी और मलयालम की नई कविता एक तुलनात्मक अध्ययन", पी.के सत्यनाथन जी के "राजभाषा के रूप में हिंदी का विकास एक अध्ययन", अब्दुलकरीम जी के "प्रेमचंद और तकषी के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन" आदि शोध प्रबंध नवीनतम विषय और

गहन अध्ययन के कारण चर्चित रहा।

इसके साथ के.वेबी जी के "आधुनिक हिंदी उपन्यासों में व्यक्तिवाद", किसुदास चंद्रन जी के "भारतेन्दुयुगीन हिंदी कविता और केरलवर्मा युगीन मलयालम कविता का तुलनात्मक अध्ययन", सुधांशु चतुर्वेदी जी के "हिन्दी और मलयालम के मुख्य समस्या नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन", वत्सला वर्मा जी की "हिंदी और मलयालम के साहित्यिक निबन्धों का तुलनात्मक अध्ययन", जी इन्दकुमारी जी की "स्वतन्त्रोत्तर हिंदी और मलयालम हास्य नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन", ए.अरविन्दाक्षन जी के "अज्ञेय के उपन्यास और कहानियाँ", एम्.इन्दुमुखी जी के "आधुनिक हिंदी उपन्यासों पर अस्तित्ववाद का प्रभाव", एस.कृष्ण पिल्लई जी के "केरलियों द्वारा प्रयुक्त हिंदी भाषा पर मातृभाषा का व्याघात-एक अध्ययन", आर सेतुनाथन जी के "कथाकार अज्ञेय के पात्र मनोवैज्ञानिक अध्ययन", वी.के सुब्रह्मण्यन जी के "हिंदी की प्रगतिवादी कहानी 1960-1980) एक अध्ययन", महेश जी के "समकालीन हन्दी कविता में बदलते मानवीय संबंध रूसवे के बाद की कविताओं के विशेष सन्दर्भ में" आदि उल्लेखनीय है।

कालीकट विश्वविद्यालय के शोध निदेशालय से मिले जानकारी के अनुसार, हिंदी विभाग से सर्वप्रथम शोध की उपाधि डॉ. मलिक मुहम्मद जी के निदेशन में शोध किये श्री एन. फिलिप जी को मिला है। आपका विषय था- "मध्ययुगीन हिंदी भक्ति काव्यों में विरह भावना"। इसके बाद एन. रवीन्द्रनाथ जी के "प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों में मार्क्सवाद का प्रभाव", के. मुहम्मद जी के "हिंदी सूफी काव्यों का समाजशास्त्रीय अध्ययन", आर. सुरेन्द्रन जी के "स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों पर विदेशी संस्कृति और चिन्तन का प्रभाव", ए.अच्युतन जी के आधुनिक भारतीय भाषाओं से हिंदी में अनूदित नाटक और उनका हिंदी रंगमंच पर प्रभाव", आर. शशिधरन जी के "1950 के बाद हिंदी और मलयालम नाटक में सामाजिक व्यंग्य एक तुलनात्मक अध्ययन", पी.के चंद्रन जी "आधुनिक हिंदी काव्यों में प्रस्तुत पुराण के उपेक्षित पात्र" डॉ. प्रमोद कोव्वप्रत जी के "ज्ञानपीठ पुरस्कृत हिंदी कवियों की काव्य कृतियाँ एक अध्ययन रूभारतीय जीवनमूल्यों के सन्दर्भ में", प्रभाकरन हेब्बार इल्लत जी के "निराला के काव्य निर्माण में वैदिक संस्कृति की भूमिका", के. एम् जयकृष्णन जी के "हिंदी और मलयालम के दार्शनिक उपन्यास एक तुलनात्मक अध्ययन अज्ञेय, जैनेन्द्र आनंद, और ओ.वी विजयन के विशेष सन्दर्भ में", बालसुब्रहमनियन जी के "हिंदी और मलयालम के सहायक क्रियाएँ तुलनात्मक अध्ययन", जयरामन जी के "नरेश मेहता के

9

मलयालम भाषियों का हिंदी अनुसंधान एक विहंगम अवलोकन

डॉ. रंजित.एम्

हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में दक्षिण भारत का योगदान कम नहीं है। शोध की शुरुआत प्रश्नों से होती है। इस आलेख में मलयालम भाषी लोग हिंदी साहित्य के बारे में कैसे-कैसे सवाल उठाये, इस पर एक विहंगम दृष्टि डालने का प्रयास किया है।

भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों से शोध किए मलयालम भाषा भाषी लोगों की संख्या कम नहीं है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, सन 1956 में लखनऊ विश्वविद्यालय से "मलयालम और हिंदी के प्रमुख कृष्ण भक्त कवियों का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध की उपाधि हासिल करके, के. भास्करन नायर जी ने केरल राज्य की हिंदी शोध यात्रा की शुरुआत की। सूरदास और चेरुश्शेरी की भक्ति भावना की तुलना और दोनों कवियों के वात्सल्य वर्णन की समानताएँ विषय पर गहनता से इस शोध प्रबंध में अध्ययन किया है। इस तरह तुलनात्मक अध्ययन की विशाल दुनिया शोधार्थियों के सामने खुल गया।

दक्षिण के महान हिंदी सेवी गोविन्द शेनायी जी सन 1958 में लखनऊ विश्वविद्यालय से "हिंदी और मलयालम कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन" नामक विषय पर शोध की उपाधि प्राप्त की। हिंदी साहित्य के दिग्गज डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के शोध निर्देशन में गणेशन जी ने "हिंदी उपन्यास साहित्य का अध्ययन और पाश्चात्य उपन्यास साहित्य से इसकी तुलना" नामक विषय पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से शोध की उपाधि प्राप्त की।

1959 में एन.ई.विश्वनाथ अय्यर जी ने सागर विश्वविद्यालय से "आधुनिक हिंदी तथा मलयालम काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ" नामक विषय पर हिंदी साहित्य के शीर्ष आलोचक आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के निर्देशन में शोध की प्राप्त की। एम.जोर्ज जी ने 1962 में "हिंदी और मलयालम राम भक्ति काव्य" विषय

पर शोध उपाधि और "भक्ति आन्दोलन का आलोचनात्मक अध्ययन विशेषतः हिंदी और मलयालम के संदर्भ में" विषय पर डी.लिट् की उपाधि आगरा विश्वविद्यालय से प्राप्त किया।

"आधुनिक हिंदी तथा मलयालम काव्यों में प्रकृति का उपयोग" विषय पर श्रीमती डेसी वर्गीस सागर विश्वविद्यालय से और वेल्लायनी अर्जुन जी अलीगढ़ विश्वविद्यालय के डॉ. हरिवंशराय शर्मा के निर्देशन में "हिंदी तथा मलयालम की समान शब्दावली" नामक विषय पर शोध और जबलपुर विश्वविद्यालय से 1968 में "दक्षिण भारतीय भाषाओं पर हिंदी शब्दावली का प्रभाव" विषय पर डी.लिट् भी प्राप्त किया। पी.के. कुंजीरामन जी आगरा विश्वविद्यालय से "हिंदी और मलयालम के खंडकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन" पर डॉक्टरेट प्राप्त किया।

आगरा विश्वविद्यालय से "हिंदी तथा मलयालम के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन" नामक विषय पर शोध उपाधि हासिल किए एन.आई.नारायणन, हिंदी विद्या पीठ आगरा से "वल्लत्तोल तथा मैथिलीशरण गुप्त के काव्यों के तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध उपाधि हासिल किए के.एस मणी, आचार्य नंददुलारे वाजपेई जी के निर्देशन में "हिंदी तथा मलयालम के भक्ति काव्यों में वात्सल्य रस" नामक विषय पर शोध उपाधि मिले सर्वश्री एन. रामननायर जी, सागर विश्वविद्यालय से "हिंदी और मलयालम के काव्य रूपों का तुलनात्मक अध्ययन" नामक विषय पर डॉक्टरेट मिले हिंदी सेवी वी.आर कृष्णन नायर, "हिंदी और मलयालम कहानी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध की उपाधि मिले जस्टिन अब्राहम, "हिंदी और मलयालम गद्य शैली के विकास का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध किये पी.जोर्ज, "हिंदी और मलयालम के प्रगतिवादी काव्य का तुलनात्मक अध्ययन" किये के.पद्मजा, "हिंदी और मलयालम में साहित्य समीक्षा का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध किये एन.आर अल्बर्ट, "तुन्चत्त रामानुजाचार्य एवं गोस्वामी तुलसीदास के रामकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन" किये पी.एस भास्करन नायर, "हिंदी और मलयालम के आंचलिक उपन्यासों का स्वरूप और विकास" विषय पर शोध किये विजयन नम्पूतिरी, "नागार्जुन एवं तकषी के उपन्यास एक तुलात्मक अध्ययन" विषय पर शोध किये पि.के हरिदासन आदि ने हिंदी और मलयालम के बीच सांस्कृतिक सेतु का निर्माण किया।

काशी विश्वविद्यालय से "हिंदी आलोचना पर पाश्चात्य आलोचना का प्रभाव" विषय पर शोध किये एस. नारायण अय्यर जी, "कवि जयशंकर प्रसाद और कुमारनाशान का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर आगरा विश्वविद्यालय